

## स्वावलम्बनम् Summary Notes Class 7 Sanskrit Chapter 3

### स्वावलम्बनम् पाठ का परिचय

प्रस्तुत पाठ में दो मित्रों की कथा के द्वारा वर्णन किया गया है कि स्वावलम्बी मनुष्य सदा सुखी रहता है। पराधीन व्यक्ति दुःखी होता है। सबको अपना कार्य स्वयं करना चाहिए। पाठ में संख्यावाची शब्दों से भी अवगत करवाया गया है।

### स्वावलम्बनम् Summary

कृष्णमूर्ति तथा श्रीकण्ठ दो मित्र थे। श्रीकण्ठ का पिता समृद्ध था। उसके घर में सब प्रकार के सुख साधन थे। उसके विशाल भवन में चालीस खम्बे थे। अठारह कमरों में पचास खिड़कियाँ थीं। कृष्णमूर्ति के माता-पिता साधारण कृषक थे। उनका घर आडम्बर शून्य तथा अत्यधिक साधारण था। एक बार श्रीकण्ठ उसके घर आया। उसके घर में नौकर को न देखकर श्रीकण्ठ ने कहा—'तुम्हारे घर में एक भी नौकर नहीं है। मेरे यहाँ तो अनेक नौकर हैं।'



स्वावलम्बी कृष्णमूर्ति कहने लगा—'मेरे आठ नौकर हैं। यथा-दो पैर, दो हाथ, दो आँख तथा दो कान। ये प्रतिपल मेरे अधीन रहते हैं। परन्तु तुम्हारे नौकर दिन-रात कार्य नहीं कर सकते।' अतः तुम नौकरों के अधीन हो। अपना कार्य स्वयं करने से सुख ही प्राप्त होता है। यह सुनकर श्रीकण्ठ अत्यधिक प्रसन्न हुआ और कहने लगा 'आज से मैं भी अपना कार्य स्वयं करूँगा।'

### स्वावलम्बनम् Word Meanings Translation in Hindi

(क) कृष्णमूर्तिः श्रीकण्ठश्च मित्रे आस्ताम्। श्रीकण्ठस्य पिता समृद्धः आसीत्। अतः तस्य भवने सर्वविधानि सुख-साधनानि आसन्। तस्मिन् विशाले भवने चत्वारिंशत् स्तम्भाः आसन्। तस्य अष्टादश-प्रकोष्ठेषु पञ्चाशत् गवाक्षाः, चतुश्चत्वारिंशत् द्वाराणि षट्त्रिंशत् विद्युत्-व्यजनानि च आसन्। तत्र दश सेवकाः निरन्तरं कार्यं कुर्वन्ति स्म। परं कृष्णमूर्तेः माता पिता च निर्धनौ कृषकदम्पती। तस्य गृहम् आडम्बरविहीनं साधारणञ्च आसीत्।

शब्दार्थः (Word Meanings) :

समृद्धः-धनवान् (rich), चत्वारिंशत्-चालीस (forty), स्तम्भाः खम्बे (pillars), अष्टादश-अठारह (eighteen), प्रकोष्ठेषु-कमरों में (in rooms), पञ्चाशत्-पचास (fifty), गवाक्षाः-खिड़कियाँ (windows), चतुश्चत्वारिंशत्-चवालीस (forty four), द्वाराणि-दरवाज़े (doors), षट्त्रिंशत्-छत्तीस (thirty six), गृहम्-घर (home), कृषकदम्पती-किसान पति-पत्नी (peasant couple), आडम्बरविहीनं-दिखावा रहित (without pomp and show.)

सरलार्थ :

कृष्णमूर्ति और शरीकण्ठ दो मित्र थे। शरीकण्ठ के पिता धनवान् थे। इसलिए उसके घर में सब प्रकार के सुख-साधन थे। उस बड़े घर में चालीस खम्भे थे। उसके अठारह कमरों में पचास खिड़कियाँ और चवालीस दरवाज़े और छत्तीस पंखे थे। वहाँ दस नौकर हमेशा (लगातार) काम करते रहते थे परन्तु कृष्णमूर्ति के माता और पिता किसान पति-पत्नी थे। उसका घर आडम्बर (दिखावा) रहित और साधारण था।

English Translation :

Krishnamurthy and Shrikantha were two friends. Shrikantha's father was rich. Therefore, there were all types of comforts and luxuries in his house. There were forty pillars in that house. There were fifty windows and forty four doors and thirty-six electric fans in eighteen rooms. Ten servants used to work continuously there, but Krishnamurthy's parents were a peasant couple. His house was without pomp and show and (very) ordinary.



(ख) एकदा शरीकण्ठः तेन सह प्रातः नववादने तस्य गृहम् अगच्छत्। तत्र कृष्णमूर्तिः तस्य माता पिता च स्वशक्त्या शरीकण्ठस्य आतिथ्यम् अकुर्वन्। एतत् दृष्ट्वा शरीकण्ठः

अकथयत्-

“मित्र! अहं भवतां सत्कारेण सन्तुष्टोऽस्मि। केवलम् इदमेव मम दुःखं यत् तव गृहे एकोऽपि भृत्यः नास्ति। मम सत्काराय भवतां बहु कष्टं जातम्। मम गृहे तु बहवः कर्मकराः सन्ति।”

शब्दार्थः (Word Meanings) :

आतिथ्यम्-अतिथि-सत्कार (hospitality), कर्मकराः-काम करने वाले (workers), सन्तुष्टः-सन्तोष करनेवाला (satisfied), भवताम्-आपके (with you), बहवः-बहुत से (many), भृत्यः-नौकर (servant).

सरलार्थ :

एक बार शरीकण्ठ उसके साथ सवेरे नौ बजे उसके घर गया। वहीं कृष्णमूर्ति और उसके माता पिता जी ने अपने सामर्थ्य से शरीकण्ठ का अतिथि-सत्कार किया। यह देखकर शरीकण्ठ ने कहा- “मित्र ! मैं तुम्हारे सत्कार से सन्तुष्ट हूँ। केवल यह बात मुझे दुःखी कर रही है कि तुम्हारे घर में एक भी सेवक नहीं है। जिससे मेरे सत्कार के लिए आप सबने बहुत कष्ट सहा है। मेरे घर में तो बहुत से सेवक हैं।”

English Translation :

Once Shrikantha went to Krishnamurthy's home with him at nine in the morning. There Krishnamurthy and his parents provided him hospitality the best of their capability. On seeing this Shrikantha said, “Friend! I am satisfied with your hospitality. The only thing that makes me unhappy is that there is not a single servant in your home because of which you are taking the trouble for my hospitality. There are many servants in my home.”

(ग) तदा कृष्णमूर्तिः अवदत्-“मित्र! ममापि अष्टौ कर्मकराः सन्ति । ते च द्वौ पादौ, द्वौ हस्तौ, द्वे नेत्रे, द्वे श्रोत्रे इति । एते प्रतिक्षणं मम सहायकाः । किन्तु तव भृत्याः सदैव सर्वत्र च उपस्थिताः भवितुं न शक्नुवन्ति । त्वं तु स्वकार्याय भृत्याधीनः । यदा यदा ते अनुपस्थिताः, तदा तदा त्वं कष्टम् अनुभवसि । स्वावलम्बने तु सर्वदा सुखमेव, न कदापि कष्टं भवति ।”

शब्दार्थः ( Word Meanings):

स्वावलम्बने-आत्मनिर्भरता में (in self-reliant), प्रतिक्षणं-हरपल (every moment), अनुपस्थिताः-उपस्थित नहीं हैं (ब०व०) (absent), अधीनः-निर्भर (dependant), स्वकार्याय-अपने काम के लिए (for your work), अनुभवसि-अनुभव करते हो (feel).

सरलार्थ :

तब कृष्णमूर्ति बोला- “मित्र! मेरे भी आठ नौकर हैं । और वे दो पैर, दो हाथ, दो आँखें और दो कान हैं । ये हर पल मेरे सहायक हैं । परन्तु तुम्हारे नौकर सदा सब जगह उपस्थित नहीं हो सकते । तुम तो अपने कार्य के लिए अपने सेवकों के अधीन हो । जब-जब वे अनुपस्थित होते हैं, तब-तब तुम कष्ट का अनुभव करते हो । स्वावलम्बन में तो हमेशा सुख ही है, कभी कष्ट नहीं होता है ।”

English Translation:

Then Krishnamurthy spoke, “Friend! I have eight servants. These are two feet, two hands, two eyes and two ears. Every moment these are my helpers. But your servants are not capable of being present everywhere all the time. You are dependent on you servants for your work. Whenever they are not present you feel distressed. There is always comfort in self-reliance and there is no problem at all.

(घ) श्रीकण्ठः अवदत्-“मित्र! तव वचनानि श्रुत्वा मम मनसि महती प्रसन्नता जाता । अधुना अहमपि स्वकार्याणि स्वयमेव कर्तुम् इच्छामि ।” भवतु, सार्धद्वादशवादनमिदम् । साम्प्रतं गृहं चलामि ।

शब्दार्थः (Word Meanings) :

अवदत्-कहा, बोला (said)

मनसि-मन (हृदय) में (in heart)

अधुना-अब (Now)

स्वयमेव-अपने आप ही (also myself only)

भवतु-ठीक है (ok)

सार्धद्वादशवादनम्-साढ़े बारह बजे (half past twelve)

साम्प्रतं-अब

इस समय (Now).

सरलार्थ :

श्रीकण्ठ बोला-“मित्र! तुम्हारे वचनों को सुनकर मेरे मन में बहुत प्रसन्नता हुई । अब मैं भी अपना काम स्वयं ही करूँगा ।” ठीक है । अब साढ़े बारह बजे हैं । मैं अब घर चलता हूँ ।

English Translation : Shrikantha said, “Friend! hearing your words, I am pleased in my heart. Now, I will also do my work myself.” All right. It is half past twelve. I shall now go home.